❋ 1 मई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] एक बाप की याद पक्की हो जाए, बुद्धि और कोई की तरफ न जाये, यह ऊंची मंज़िल है। इसके लिए आत्म-अभिमानी बनने का पुरूषार्थ करना पड़े। जब तुम आत्म-अभिमानी बन जायेंगे तो सब विकारी ख्यालात खत्म हो जायेंगे।

2] गुरू लोग तो बहुत ढेर हैं, सतगुरू एक ही है। बहुत हैं जो अपने को गुरू भी कहते हैं, सतगुरू भी कहते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो– गुरू और सतगुरू में तो फर्क है। सत् अर्थात् ट्रुथ। सत्य एक ही निराकार बाप को कहा जाता है, न कि मनुष्य को।

3] यह तो बाप पढ़ाते हैं, न कि ब्रह्मा। यह ब्रह्मा भी उनसे पढ़कर फिर पढ़ाते है। तुम ब्रह्माकुमार-कुमारियां कहलाने वाले भी परमपिता परमात्मा सतगुरू से पढ़ते हो। तुमको उनसे ताकत मिलती है। ताकत का मतलब यह नहीं कि कोई को घूंसा मारो जो गिर पड़े। नहीं, यह है रूहानी ताकत जो रूहानी बाप द्वारा मिलती है। याद के बल से तुम शान्ति को पाते हो और पढ़ाई से तुमको सुख मिलता है।

4] साधू-सन्त आदि जो शास्त्र पढ़ते-पढ़ाते हैं, उनमें कोई बड़ाई नहीं, उससे कोई को शान्ति तो मिल नहीं सकती। खुद भी शान्ति के लिए धक्के खाते हैं। जंगल में अगर शान्ति होती तो फिर वापिस क्यों लौटते।

5] देह-अभिमान से ही विकारी ख्याल आते हैं। फिर विकार की ही दृष्टि से देखते हैं। देवताओं की विकारी दृष्टि कभी भी हो नहीं सकती। ज्ञान से फिर दृष्टि बदल जाती है। सतयुग में ऐसे थोड़ेही प्यार करेंगे। डांस करेंगे। वहाँ प्यार करेंगे परन्तु विकार की बांस नहीं होगी।

❋ योग-

1] बाप की याद पक्की हो जायेगी तो फिर और कोई की तरफ बुद्धि नहीं जायेगी। बहुत ऊंची मंज़िल है। पवित्रता की बात सुनकर आग में जल मरते हैं। कहते हैं यह बात तो कभी कोई ने कही नहीं। कोई शास्त्र में है नहीं। बड़ा मुश्किल समझते हैं।

2] तुमको सुख से बाप की याद में जाना है। जितना मुझ बाप को याद करेंगे तो और सब भूल जायेंगे। कोई भी याद नहीं रहेगा। परन्तु यह अवस्था तब हो जब पक्का निश्चय हो। निश्चय नहीं तो याद भी ठहर नहीं सकती। नाम मात्र सिर्फ कहते हैं। निश्चय ही नहीं तो याद काहे को करेंगे। सबको एक जैसा निश्चय तो नहीं है ना। नाम मात्र सिर्फ कहते हैं। माया निश्चय से हटा देती है। जैसे के वैसे बन जाते हैं। पहले-पहले तो निश्चय चाहिए बाप में।

❋ धारणा-

1] समझाने वाला एक बाप है, वह बाप कहते हैं सबको निर्विकारी बनना है।

2] यह विकार तुम्हारा सबसे बड़ा दुश्मन है, इनको छोड़ो। फिर जो नहीं छोड़ सकते हैं वे कितना झगड़ा करते हैं। मातायें भी कोई-कोई ऐसी निकल पड़ती हैं जो विकार के लिए बड़ा हंगामा करती हैं।

3] प्योरिटी के लिए कितना माथा मारना पड़ता है। बड़ी मेहनत है इसलिए बाप कहते हैं एक-दो को आत्मा ही देखो। सतयुग में भी तुम आत्म-अभिमानी रहते हो। वहाँ तो रावण राज्य ही नहीं, विकार की बात नहीं। यहाँ रावण राज्य में सब विकारी हैं इसलिए बाप आकार निर्विकारी बनाते हैं। नहीं बनेंगे तो सजा खानी पड़ेगी। आत्मा पवित्र बनने बिगर ऊपर जा न सके। हिसाब-किताब चुक्तू करना पड़ता है। फिर भी पद कम हो पड़ता है।

❋ सेवा-

1] आप मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चों के संकल्प में इतनी शक्ति है जो जिस समय चाहो वह कर सकते हो और करा भी सकते हो क्योंकि आपका संकल्प सदा शुभ, श्रेष्ठ और कल्याणकारी है। जो श्रेष्ठ और कल्याण का संकल्प है वह सिद्ध जरूर होता है।